

19

20



नूह और महान बाढ़

द्वारा लिखित Edward Hughes
द्वारा चित्र Byron Unger; Lazarus

द्वारा अनुवाद करो गयो
द्वारा अनुकूल: M. Maillot; Tammy S.

60 की कहानी में से 3

M1914.org

Bible for Children, PO Box 3, Winnipeg MB R3C 2G1 Canada

लाइसेंस: तुमई जा कहानी को पात्रिका या छापन को अधिकार है,
जब तक तुम जाई बेचत नाइ हो।

परमेश्वर जान्त हैं की हम सब ने बुरे काम
करें हैं। जिन्हें वे पाप कहत हैं। पाप को दंड मृत्यु है ॥

परमेश्वर हमें बहुत प्रेम करत हैं उसने अपने बेटा यीशुको
कृश पर मरन और हमारे पाप के दंड को भोगन केलिए
भेजो। यीशु जिंदा हुआ और स्वर्ग पर चलेगये। अब
परमेश्वर हमारे पाप को क्षमा कर सकत हैं ॥

अगर तुम अपने पाप से मुडनो चाहत हो तो जा परमेश्वर से
कहो: प्रिय परमेश्वर हमारो मननो है की यीशु हमरा ले मारेगये
और आब फिरसे जिंदा होई गए। कृपया मेरी जिदिगी मा
आई के मेरे पापों को मांफ करो। इस ले आब हम नव जीवन
पाई सकत हैं और फिर तुम्हारे संगे हमेशा के ले रही। अपने
वचन के रूप मा मेरी सहायता करो। अमीन। यहुना ३॥

बाइबिल पढो और हर दिन परमेश्वर से बातें करो ॥

कन्नौजी भाषा

Kannauji

वे नूह ही एक मनुष्य हतो जो
परमेश्वर की उपासना करत हतो
और सब लोग नफरत और उनकी
आज्ञा को उलंघन करत हते, एक
दिन परमेश्वर ने चौकाऊन वाली
बाल कही, हम जा दुष्ट संसार
कऊ नष्ट करी, तब
परमेश्वर
ने नूह कऊ
बताओ की केवल
तुम्हारो ही
परिवार बचाई
लो जई ॥



फिर परमेश्वर ने नूह को चेतावनी दई के कही एक
बडी बाढ़ अई, पूरी पृथ्वी पानी से भरीजई ॥ इस ले
लकड़ी एको एक जहाज बनावड ॥ फिर वा जहाज
माँ तुम्हारे परिवार के ले और जानवर के रहान
के ले हुई जऊ नूह को आदेश दयो गयो
हतो, और परमेश्वर ने नूह को बिलकुल
सही निर्देश दयो

तब नूह काम
माँ ब्यस्त
हुईगए ॥



1

2



लोगन ने सायद कही हुई की नूह जउ का बनाऊत और जो एक जहाज काए बनाऊत हो | पर नूह ने काम करनो बंद

नाहीं करो | और लोगन को परमेश्वर के बारे माँ बताऊत रहे | लेकिन किसउ ने नाही सुनी |

3



नूह को बहुत बिस्वास हतो वे ही परमेश्वर पर बिस्वास बारिश होन से पहले ही कत हते | तब जहाज पानी से भरन के ले तयार हुई गो |

4



तब जानवरन मई से कुछ सात प्रकार की प्रजाति लाए | और अन्य अन्य मई से दुई दुई छोटे और बड़े पछियान मई से और जानवर मई से दुई दुई छोटे और बड़े के ले जहाज माँ जान के ले रास्ता बनाई दई |

5



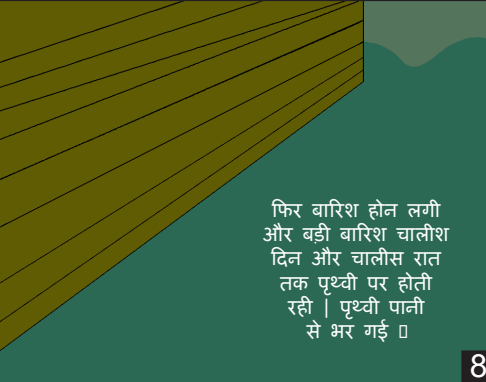
तब सायद लोग नूह से अपमानित हुई गए | क्योंकि उन्ने जानवरन को जहाज माँ जात भय देखो, लेकिन तहँ उन्ने परमेश्वर के बिरुध पाप कारीबो बंद नाई करो | और नाही उन्ने जहाज माँ जान केले पूछी |

6



अंत माँ सब जानवर और सब नायछपिकउ जहाज माँ सवार होन के ले कही | परमेश्वर ने नूह को बुलाई के कही की तुम और तुम्हारा परिवार नूह की पत्नी और तुम्हारा बेटा और उनकी पत्निया सब जहाज माँ जाए | तब परमेश्वर ने दरवाजा बंद करदो |

7



फिर बारिश होन लगी और बड़ी बारिश चालीश दिन और चालीस रात तक पृथ्वी पर होती रही | पृथ्वी पानी से भर गई |

8



बाड़ के पानी से कस्बा और गाँव डूबी गए तब बारिश बंद हुईगई और पानी से पहाड़ तक डूबी गए हते | तब जिते सांस ले वाले हते वे सब मरि गए |

9



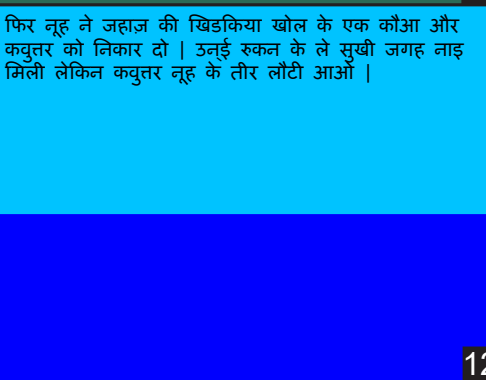
जैसे जैसे पानी बढ़त गयो जहाज पानी के ऊपर तेहरन लगी और शायद जहाज के भीतर अन्धरो हुई और हुई सकत बाके भीतर घुटन या डरावनी लगत हुई | लेकिन जहाज ने बाड़ से नूह को बचाई दो |

10



पांच महीना के बाद परमेश्वर ने सुखन के ले हवा चलाई | धीरे धीरे जहाज अरारत पहाड़ के ऊंचे स्थान पर ठहर गओ और नूह फिर चालीश दिन तक बाके भीतर रहे क्योंकि पानी घटती हतो |

11



फिर नूह ने जहाज की खिडकिया खोल के एक कौआ और कवुतर को निकार दो | उन्ई रुकन के ले सुखी जगह नाइ मिली लेकिन कवुतर नूह के तीर लौटी आओ |

12



एक हफ्ता के बाद नूह ने फिर से कोशिश कारी | तब कवुतर अपनी चोंच माँ एक नयो जैतून को पत्ता संग लई के वापस लौटी आयो | फिर अगले हफ्ता माँ कवुतर लौट के नाइ आयो |

13



तब परमेश्वर ने नूह को बताओ की अब जहाज छोड देन को समय है और नूह और बाके परिवार ने जानवरन को उतरा दो |

14



तब नूह कितने आभारी महसूस कत हुई |

तब उन्ने एक वेदी बनाई और परमेश्वर की उपासना कारी की जिसने बाई और बा के परिवार को भयानक बाड से बचाओ |

15



और परमेश्वर ने एक अद्भुत वचन दओ की कभाऊँ मनुष्य के पापन को न्याय करने के लिए बाड नाइ पठई |

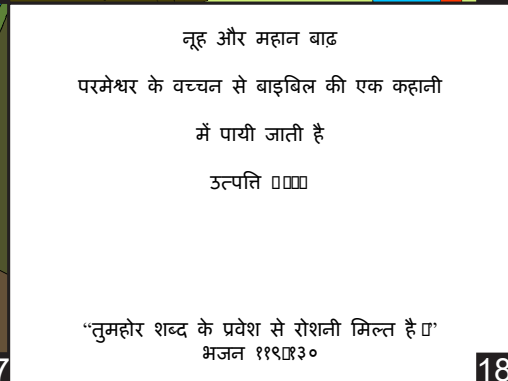
तब परमेश्वर ने अपने वादे के ले एक महान याद कराऊँन के ले एक धनुष को जो परमेश्वर ने चिन्ह ठहराओ हतो |

16



फिर बाड के बाद नूह और उसके परिवार को नई शुरूवात मिली | वा समय के बाद बा के वंश के द्वारा पूरी पृथ्वी भरी गई | दुनिया के सब देश नूह और बा के बच्चन से भर |

17



नूह और महान बाड परमेश्वर के वचन से बाइबिल की एक कहानी में पायी जाती है उत्पत्ति १-११

“तुमहोर शब्द के प्रवेश से रोशनी मिलत है |” भजन ११९:३०

18